ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 110-112
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

दलित कहानी में व्यक्त नारी समस्याएँ

डॉ0 संगीता राय

पी–एच0डी0– हिन्दी विभाग ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा (बिहार), भारत

Received- 13 .02. 2022, Revised- 18 .02.2022, Accepted - 22.02.2022 E-mail: vijayvermadu@gmail.com

सारांशः – *दलित स्त्री की बात करें तो इस समस्या की गहराई को इसी बात से समझा जा सकता है कि 'कौशल्या वैसंत्री' ने इसे दोहरा अभिशाप कहा है – अर्थात् एक तो दलित होना ही 'तिरस्कृत' और 'जूठन' होने के बराबर है, उस पर दलित महिला होना तो दोहरा अभिशाप के समतुल्य है, क्योंकि दलित पुरुष समाज भी उसी 'दंभ' और 'बुराइयों' का शिकार है जो एक पुरुष प्रधान समाज में एक पुरुष होता है। अर्थात एक दलित पुरुष जो सर्वण पुरुष के लिए 'गुलाम' या 'अछूत' ज्यादा कुछ नहीं है, वह अपनी स्त्री के प्रति वैसा ही नजरिया रखता है। परन्तु और भी गहरी सच्चाई की बात करें तो सच यही है कि दलित महिला तीन स्तर पर 'अभिशप्त' है – एक दलित होने का, (जातीय समस्या), दूसरी महिला होने का (लैंगिक समस्या) और तीसरा गरीब होने का (अर्थात वर्ग की समस्या)। दलित स्त्रियाँ मेहनतकश होते हुए भी और गरीब है क्योंकि उनमें शिक्षा का अभाव है।*

कुंजीभूत शब्द– तिरस्कृत, जूठन, दोहरा अभिशाप, समतुल्य, गुलाम, अछूत, नजरिया, अभिशप्त, दूजातीय समस्या।

पुरुषों की समाज व्यवस्था जिसमें निर्णय लेने के सारे अधिकार पुरुषों के ही पास होते हैं, नारी मात्र की स्थिति कोई बेहतर नहीं है। फिर दलित नारी का तो कहना ही क्या? भारतीय परिवेश में देखें तो दलित स्त्री मात्र होने की त्रासदी नहीं सहती, बल्कि दलित जाति से होने के कारण वह लिंगभेद और जातिभेद सहते हुए दोहरे–तिहरे आक्रमण ही क्षेलती है। एक पुरुष–प्रधान समाज होने के कारण वह अपने समाज के पुरुषों की दृष्टि में भी दूसरे दर्जे की प्राणी मात्र है, जो उनके अनुसार कम बुद्धि की है। इसको आधार बनाकर तमाम उलाहने, अवहेलनाएँ, तिरस्कार उसे झेलने पड़े हैं। इस कारण उसे अपनों से ही उपेक्षा तथा प्रताड़ना मिलती है। दूसरी और गैर–दलित समाज उसे दो तरह से कमजोर पाता है, एक तो वह स्त्री है, दूसरे वह दलित जाति से होती है। हर वर्ग, समुदाय की स्त्रियों की दशा उस वर्ग के पुरुषों की दशा के अनुसार होती है। वह ब्राह्मण, वैश्य, शूद्र और अछूत पुरुषों की जैसी सामाजिक दशा हैं, उनके समाज की स्त्रियों की स्थिति में विशेष फर्क नहीं है।

रजतरानी 'मीनू' के शब्दों में, "दलित स्त्री को भारतीय संविधान में समान अधिकार प्राप्त होने के बावजूद व्यावहारिक स्थिति सामंती युग की व्यवस्था को दर्शाती है। तमाम अमानवीय यातनाएँ दलित महिलाओं को जातिभेद के कारण दी जाती है, जिनसे उनका मनोबल गिरता है और उनकी मानवीय गरिमापूर्ण अस्मिता आहत होती है। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कहानी 'रीत' का नायक अपने पूर्वजों से चली आ रही उस सामंती रीत को तोड़ता है, जिसमे नवविवाहिता को पहली रात जमींदार के घर गुज़ारनी पड़ती है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि की एक कहानी 'यह अंत नहीं' में नायिका बिरमा के साथ बलात्कार करने के इरादे से की गई छेड़खानी को उजागर किया गया। बिरमा का भाई और उसके मित्र जब थाने में रिपोर्ट दर्ज कराने गए तो पुलिस ने रिपोर्ट तो नहीं लिखी बल्कि पुलिस इंस्पेक्टर ने कटाक्ष करते हुए कहा – "छेड़खानी हुई है ... बलात्कार तो नहीं हुआ ... तुम लोग बात का बतंगड़ बना रहे हो। गाँव में राजनीति फैलाकर शांति भंग करना चाहते हो। मैं अपने इलाके में गुंडागर्दी नहीं होने दूंगा .. चलते बनो। कुछ क्षण उनके बाहर निकलने का इंतजार किया। वे टस से मस नहीं हुए, तो कुटिल मुद्रा बनाकर बोला, "फूल खिलेगा तो भौरें मंडरायेंगें ही ...। रजतरानी 'मीनू' के शब्दों में, "पुलिस इंस्पेक्टर के रूप में यहाँ एक सवर्ण पुरुष का सामंती चरित्र उजागर हुआ है। यहाँ उसका कथन उसकी मनःस्थिति को दर्शाता है। यह नारी, नारी होने के कारण अपमानित नहीं हो रही। उसके पीछे उसका दलित स्त्री होना उसका प्रमुख है। यदि इस द्विज जाति के पुलिस इंस्पेक्टर को पता चल जाए कि जिस नवयौवना को फूल और उस पर भौंरे मंडराने की बात करके वह खुश हो रहा है, यदि यही युवती उसकी जाति की होती तो क्या वह खुशी के साथ उक्त व्यंग्य करता? वास्तव में वह इस तरह का अपराध करने वाले का खून करने का प्रयास करता। इस तरह यह कहानी, हमारे देश में कानून व्यवस्था का अंग मानी जाने वाली पुलिस में जातिभेद की आपराधिक मानसिकता को उजागर करतीं है।

नारी गाँवों के गैर–दलित जमींदार, मुखिया, प्रधान और सरपंच इत्यादि की गिद्ध दृष्टि मात्र से घायल नहीं होती बल्कि शहरों, कस्बों के लाला और सेठों की कुदृष्टि से भी दलित नारी छली जाती रही है। रत्न कुमार सांभरिया की कहानी 'क्षितिज' की नायिका रेवती से दो जगह छली जाती है।

ससुराल में जमींदार की हवश की शिकार होती है। वहाँ से बचकर शहर में पति सोमा के साथ मजदूरी करने आती

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

है, तो यहाँ भी उस पर वृद्ध लाला सुख प्रसाद की गिद्ध दृष्टि पड़ती है। वह अपनी बूढ़ी देह की परवाह न कर सुबह शाम रेवती को ह्रदयकलिका के रूप में देखता था। वह रेवती की ओर आँख दबाता, जेब बजाता, कानों के टॉप्स दिखाता, पैंडल की चैन चुटकी में पकड़कर रेवती की ओर झुलाता। भाँति–भाँति के प्रलोभन देकर उसने रेवती को पटाने की लाख कोशिश की, लेकिन वह थी कि उसकी ओर आँख उठाकर भी नहीं देखती थी। सर्दी लगने से उसके पति सोमा की मृत्यु हो जाती है। पति की लाश पर बिलखती रेवती पर पति की हत्या और धंधेवाली का आरोप लगा कर पुलिस उसको उत्पीड़ित कर गिरतार करती है। रजतरानी 'मीनू' कहती हैं, 'क्षितिज' कहानी में दलित नारी की वेदना बहुत ही यथार्थ रूप में उभर कर सामने आई है। सामाजिक सोच का स्तर और कानून–व्यवस्था का बिंब भी सटीक रूप से उभरता है। अपराधी ही निरपराध को अपराध के आरोप में फँसाता है। रेवती का अपराध लाला के प्रलोभनों में न फंसना था। लाला उसे अपराधी साबित कर देता है। लेखक ने समाज में लाला सुख प्रसाद जैसे पूंजीपतियों और कानून–व्यवस्था की मुखौटे जारी रक्षक पुलिस की संकीर्ण मानसिकता को दिखाने का प्रयास किया है जिसमें रेवती को रोटी के लिए गाँव से शहर भागकर मजदूरी करने आना पड़ता है। वह गाँव और शहर दोनों जगह छली और ठगी जाती है। वह अपनी देह और दिमाग दोनों पर दलित विरोधी समाज–व्यवस्था के प्रहार झेलती है, जबकि वह निर्दोष है। वह सीधी, सरल, स्वाभिमानी और सद्चरित्र स्त्री है। प्रश्न उठता है कि क्या दलित स्त्रियों का सद्चरित्र और ईमानदार बनना अपराध है? इसकी सजा रेवती जैसी नारियों को कब तक झेलनी पड़ेगी?

बिपिन बिहारी की कहानी 'पहचान' की पात्र लाजो अबोध बच्ची थी। तभी से पिता–पुत्र जवाहर बाबू और दशरथ बाबू की वासना की शिकार होती रही। जब बोध हुआ तो वह .त्य को मजबूर बाप की बेटी की विवशता समझ कर सहती रही। इसी बीच गर्भ ठहर जाने पर बाप–बेटे दोनों उसे नकारते रहे। दलित स्त्रियों की स्थिति जाल में फंसी मछली के समान है। दलित स्त्री को यदि इस जाल से निकलने का कोई विकल्प हो सकता है, तो वह है उसका शिक्षित होना व आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करना। दूसरा प्रश्न दलितों के प्रति सवर्ण समाज की मानसिकता का है। उनकी मानसिकता का बदलना भी शैक्षिक और आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ किए बगैर संभव नहीं। कोई दया नहीं करता। उसे मजबूर करने की आवश्यकता है।

मोहनदास नैमिशराय की कहानी 'अपना गाँव' की छमिया (कबूतरी) अपने पति संपत की अनुपस्थिति में बेहद मजबूर, विवश और निरीह नारी है। ठाकुर का मझला जब उसे पूरे गाँव में निर्वस्त्र करके घुमाता है, जो समस्त गाँववासी मूक बने जिंदा लाश के समान देखते रहते हैं। कोई प्रतिकार नहीं करता। वह अकेली प्रताड़ित और अपमानित होती रहती। उसका पति संपत पुलिस में रिपोर्ट दर्ज अवश्य करता है, परंतु पुलिस भी उसको शाब्दिक रूप से अपमानित करती है।

डा. कुसुम वियोगी की कहानी 'प्रश्नचिन्ह' में भारतीय समाज में स्त्री की व्यथा को सरलीकृत ढंग से चित्रित किया गया है।

प्रस्तुत कहानी में भिखारिन नारी की विवशता को निम्न प्रकार दर्शाया गया है। वह कहती है – "हमारा बचवा गाँव में भूखन मरन लगी, सासुन तब भी लड़िन लागी और एक दिन हम बच्चन को लई, दिल्ली चली आइबा। हमार मर्द दुई चार पैसा कमाय खातिर दिल्ली आवत जात रहिन। दुई–अढाई बरस गुजर गए। उसे खोजत फिरत। अब वह नांहि मिलत है। खूबहि दूर–टकार रही करत फिरी। कहा करि, दुई चार रोटी माँगकर गुजार करिहौ और बाल–बच्चन का पोषण की चिंता सतात रहि। हमार माँ–बाप भी नांहि कहाँ डूब मरहिं।' कहानी की यह स्थिति हमारे देश की महानता, समृद्धिता, श्रेष्ठता और गर्व करने वाले विशेषणों पर प्रश्न–चिन्ह लगाती है।

कोई स्त्री स्वेच्छा से न तो भीख माँगेगी न ही तन की प्यास बुझाने के लिए अपना शरीर सार्वजनिक करेगी। उसकी परिस्थितियाँ उसके लिए जिम्मेदार हैं। हमारी सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था, जिसमें पुत्री का पिता की संपति में भाइयों के समान बहन को संपत्ति का अधिकार न होना है। दलित स्त्रियों के साथ आर्थिक समस्याएं और अधिक है, क्योंकि इनके पिता अल्प संपति वाले होते हैं, इससे इनको विरासत में मिलती है। मात्र विवशता, भूख, गरीबी और अपमान भरी जिंदगी। यह अपमान घर–बाहर दोनों जगह झेलने पड़ते हैं दलित स्त्रियों को।

'अस्थियों के अक्षर' की नारी सौराज की 'माँ' घर में एक रूपया चोरी होने की सजा पाती है। सजा से पूर्व उससे एक रूपया चोरी करने के बारे में पड़ताल भी नहीं की जाती है। उसका पति भिखारी और देवर डल्ला पुरुष प्रधानता के अहं में उसकी शारीरिक प्रताड़ना देना अपना अधिकार समझते हैं, जबकि उसका कोई अपराध नहीं है। उसने रूपया चोरी नहीं किया है। इस घटना में मुख्य कारण यह भी है कि सौराज सौतेला बेटा है और माँ भिखारी की दूसरी पत्नी। सौराज की माँ को जानवरों से भी अधिक बेरहमी से पीटा जाता है। वह मात्र एक रुपया चोरी होने की सजा झेलती है। दूसरी तरफ सौराज में पढ़ने की भूख रोटी से बढ़ कर है। जैसे एक भूखा खाने की चीजें चोरी करता है तो बालक सौराज पहली कक्षा की एक किताब को पाने के लिए चाचा डल्ला की जेब से एक रूपया यह सोच कर निकाल लेता है कि कि मुट्ठी भर रूपयों में उन्हें

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- I, Issues-23, YEAR- Jan.-March-2022

एक रूपया पता नहीं चलेगा, वह उससे किताब खरीद लेगा। वह लाला की दुकान पर जाता है। तभी डल्ला को देखते ही वह रूपया नाली के पास फेंक देता है। यह सोचकर कि जब वह चले जाएंगे, तब उठा कर किताब ले लेगा, मगर उसकी ज्ञान की भूख वैसी ही रह जाती है। उस रुपया को उसी की तरह किसी जरूरतमंद ने उठा लिया था।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि दलित कहानियों में नारी की स्थिति अत्यंत शोचनीय है। वह पुरुष–प्रधान तथा जाति–प्रधान व्यवस्था की शिकार है। वह तिहरी दासता के स्तर पर जीवन व्यतीत कर रही है। उसकी मुक्ति का सवाल समाधान की मांग करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. रजतरानी 'मीनू' हिन्दी दलित कथा साहित्य : अवधारणाएँ और विधाएँ, पृ. 167–168.
2. नैमिशराय, मोहनदास, गरिमा भारती, मार्च 1998.
3. वाल्मीकि, ओमप्रकाश, एमएचडी 03, इग्नू पाठ्य–सामग्री, पृ. 204.
4. वाल्मीकि, ओमप्रकाश, एमएचडी. 03, इन पाठ्य–सामग्री, पृ. 204.
5. रजतरानी 'मीनू' हिन्दी दलित कथा साहित्य : अवधारणाएँ और विधाएँ, पृ. 169.
6. सांभरिया, रत्नकुमार, सुमनलिपि, नवंबर 1995.
7. रजतरानी 'मीनू' हिन्दी दलित कथा साहित्य : अवधारणाएँ और विधाएँ, पृ. 173.
8. वियोगी, डा. कुसुम, चार इंच की कलम (कहानी संग्रह) पृ. 35.
9. वियोगी, डा. कुसुम,, चार इंच की कलम (कहानी संग्रह) पृ. 37–38.

*****